खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

श्रीः

ज्योतिर्वित्काशीनाथविरचितं

# लग्नजातकम्

मुरादाबादनिवासि पं० ज्वालाप्रसादजीमिश्रकृत-

(हिन्दी टीका सहीत)

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई-४.

# भूमिका

ज्योतिषशास्त्रके ज्ञाताओंसे यह बात छिपी नहीं है कि, यदि बालकका जन्मइष्ट ठीक होगा तो ग्रहोंका फल भी ठीक होगा, और यदि इष्टमें किसी प्रकारकी गड़बड़ी होगई तो सम्पूर्ण फलमें गड़बड़ी मच जाती है, इसलिये बालकके पिताको उचित है कि, सोवरमें ऐसी चतुर स्त्रीको नियुक्त करै कि, बालक भूमिपर आकर ज्योंही स्वांस ले कि, तत्काल उसकी सूचना बाहर देनी चाहिये विना इसके जन्म पत्र अशुद्ध हो जाता है बालकका जन्म ठीक समय में हुआ है या नहीं. इसी बातके ठीक करनेके निमित्त लग्नजातकसे वह सब मेल मिलाना चाहिये, यदि इस लग्नजातकसे फल मिलजाय तो जान लेना कि, बालक का इष्टकाल ठीक है, यदि न मिले तो इष्टकालमें अन्तर जानना, और उसको फिर शुद्ध करना चाहिये, इस लग्नजातकमें हमने जो जो उपयोगी विषय रखने उचित समझे वे सब इसमें और भी अधिक कर दिये हैं और मुझे आशा है कि, इस छोटेसे ग्रंथको कंठकर पंडित जन प्रसूता स्त्री तथा बालकके विषयमें बड़े चमत्कारिक विषयोंको बर्णन करके ज्योतिषशास्त्रकी उत्कृष्टता सम्पादन कर सकते हैं !

इसप्रकार यह ग्रंथ हिन्दीटीकासे अलंकृत कर "श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम्) यंत्रालयाध्यक्ष सेठजी श्रीयुत खेमराज श्रीकृष्णदासजीके कर कमलमें सब प्रकारके स्वत्वसहित समर्पण कर दिया है।

पाठकोंका इससे कुछ उपकार होगा तो मैं अपने परिश्रमको सफल मानूंगा।

सज्जनोंका अनुगृहीत पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र,
(दीनदारपुरा)—मुरादाबाद

श्रीगणेशाय नमः

# अथ लग्नजातकम्

## हिंदीटीकासहितम्

दोहा—श्रीगणेश मंगलकरन, हरन सकल भय शूल ।
द्विज ज्वालाप्रसादपर, सदा रहो अनुकूल ।। १ ।।
विधि हरि हर गणपति गिरा, प्रेमसहित शिरनाय ।
हिन्दीटीका सह लग्नजातक, लिखत बनाय ।।२।।

मंगलाचरणश्लोकः

ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः ।
नमोनमः सहस्रांशो आदित्याय नमोनमः ॥१॥

तारानक्षत्रोंके दिनके अधिपति सहस्रों किरणोंवाले आदित्यके अर्थ नमस्कार करते हैं ॥ १ ॥

तुलालिकुम्भाजकुलीरलग्ने वेद्यं प्रसूतागृहपूर्वद्वारे कन्याधनुर्मीननृयुग्मलग्ने स्याद्दुत्तरद्वारि प्रतीचिगोस्थः ॥ २ ॥

यदि बालकके जन्मसमयमें तुला, वृश्चिक, कुम्भ, मेष, कर्क लग्न हों तो सोवरके घरका द्वार पूर्वमुख जानिये; यदि कन्या, धन, मीन, मिथुन लग्नमें बालकका जन्म हो तो प्रसूतिघरका द्वार उत्तरकी ओर

जानना, और जन्मसमय वृषलग्न हो तो प्रसूतिद्वार पश्चिममुख कहना ॥ २ ॥

मृगारिलग्ने मकरे तथापि भवेत्प्रसूतागृहदक्षिणस्याम् । एवं हि लग्नात्परिचिन्तनीयं सूतीगृहद्वारमिदं प्रदिष्टम् ॥ ३ ॥

यदि जन्मसमय सिंह और मकरलग्न हो तो प्रसूताद्वार दक्षिणमुख कहना चाहिये, इस प्रकार लग्नद्वारा प्रसूतिकागारका मुख विचारना चाहिये ॥ ३ ॥

मेषकुलीरतुलालिघटैः प्रागुत्तरतो गुरुसौम्यगृहेषु॥
पश्चिमतश्च वृषेण निवासो दक्षिणभागकरौ मृगसिंहौ ॥ ४ ॥

यदि बालकके जन्मसमयमें मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक, कुम्भलग्न हों तो वास्तुसे पूर्वकी ओर जन्म कहना, यदि धन, मीन, मिथुन, कन्या इन लग्नोंमें जन्म हो तो उत्तरकी ओर जन्म कहना, वृषमें जन्म हो तो पश्चिम भागमें और मकर सिंहमें जन्म हो तो दक्षिणकी ओर प्रसव कहना ॥ ४ ॥

मीने मेषे च द्वे नार्यौ चत्वारि वृषकुम्भयोः ॥
मकरे मिथुने पञ्च बाणाश्च धनकर्कयोः ॥

अन्यलग्ने भवेत्त्रीणि प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ ५ ॥

यदि मीन वा मेषलग्नमें जन्म हो तो प्रसूताके समीप २ स्त्री कहनी। वृष कुम्भमें जन्म हो तो चार स्त्री। मकर, मिथुन, धन और कर्कलग्नमें जन्म हो तो प्रसूताके समीप पांच स्त्री जाननी। और दूसरे लग्न सिंह, कन्या, तुला वृश्चिकमें तीन स्त्री समीप जाननी ॥ ५ ॥

चन्द्रलग्नान्तरगतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः ॥
बहिरन्तश्च चक्रार्द्धे दृश्यादृश्येऽन्यथापरे ॥ ६ ॥

जन्मकालमें चन्द्रमा और लग्नके अन्तर्गत जितने ग्रह हों उतनीही स्त्री सूतिकाके निकट जाननी। और उन ग्रहोंकेही समान उन स्त्रियोंके रूप, वर्ण, आयु ज्ञातिको कहना, और चक्रार्द्ध अर्थात् लग्नसे सप्तम स्थानतक जितने ग्रह हों उतनीही स्त्री सूतिकाके समीप कहनी, और अष्टमस्थानसे बारहवें स्थानपर्यन्त जितने ग्रह हों उतनी स्त्री सूतिकागृहसे बाहर जाननी। और इनमें जो ग्रह उच्च वा वक्रगतिका हो तो तिगुनी स्त्री कहनी, जो उच्चके नवांशक वा अपने नवांशक वा द्रेष्काणमें हो तो द्विगुनी स्त्री जाननी ॥ ६ ॥

पापैश्च विधवा नारी क्रूरैरपि कुमारिका ॥
सौम्यग्रहैश्च सुभगा सूतिकायां विधीयते ॥ ७ ॥

जितने पापग्रह हों उतनी विधवा स्त्री, जितने क्रूर-ग्रह हों उतनी कुमारी और शुभग्रहोंके योगसे सौभाग्य-वती स्त्रियोंकी संख्या सूतिकाके निकट जानना ॥ ७॥

शब्दो मेषे सिंहे मिथुने वा तथा तुले ॥
घटस्त्रियोरर्धशब्दः शेषाः शब्दविवर्जिताः ॥ ८॥

यदि जन्मसमयमें मेष, वृष, सिंह, मिथुन, तुलालग्न हों तो बालक जन्मतेही रोया, और, कुंभ तथा कन्या लग्न हो तो कुछ रोदन किया, और कर्क, वृश्चिक, धन तथा मीनलग्नमें जन्म हुआ हो तो बालक जन्मतेही नहीं रोया ऐसा जानना ॥ ८ ॥

मेषत्रिपंचाननतौलिलग्ने विस्मृत्य सर्वं बहु रोदिति स्म ॥ स्वल्पं घटे स्त्री शिशुरन्यलग्ने नो रोदिति ज्ञान बलस्य सत्त्वात् ॥ ९ ॥

मेष, वृष, मिथुन, सिंह, तुला लग्नोंमें बालकका जन्म हो तो वह बालक सब ज्ञानको भूलकर बहुत रोदन करता है, कुम्भ कन्यालग्नमें कुछेक रोता है,

और दूसरी लग्नोंमें जन्म हो तो ज्ञानबलसे रुदन नहीं करता है ॥ ९ ॥

सिंहे कन्याधनुर्मीने कर्के मेषे तथा तुले ॥
अन्तरिक्षे भवेज्जन्म शेषे भूमौ निगद्यते ॥ १० ॥

सिंह, कन्या, धन, मीन, कर्क, मेष और तुला लग्नोंमें बालकका जन्म शय्यापर हुआ जानना और शेष वृष, मिथुन, वृश्चिक, मकर, कुम्भलग्न हों तो भूमिमें जन्म हुआ जानना ॥ १० ॥

प्राच्यादिगृहे क्रियादयो द्वौ द्वौ कोणगता द्विमूर्तयः ॥ शय्यास्वपि वास्तुवद्वदेत्पादैः षट्त्रिनवान्त्यसंस्थितैः ॥ ११ ॥

बृहज्जातकके इस श्लोकके दो बातोंका विचार होता है कि, बालक जन्मग्रहके किस भागमें जन्मा है दूसरे यह कि खाटका शिरहाना किस ओर है सो इस भांति जानना कि, मेष, वृष लग्न हों तो पूर्व ओर, मिथुन हो तो अग्निकोणकी ओर, कर्क, सिंहसे दक्षिणमें, कन्यासे नैर्ऋत्यकोणमें, तुला, वृश्चिकसे पश्चिममें, धनसे वायुकोणमें, मकर, कुंभसे उत्तरमें, मीनसे ईशानमें जन्म वा खाटका शिरहाना कहना। और छठे तीसरे नवें बारहवें

स्थानसे खाटके चारों पाये कहना, तीसरे घरसे खाटका दहिना पाया, बारहवेंसे बायांपाया, छठे घरसे पांयतका दहना पाया नौमेंसे बायां पाया जानना, जहां पापग्रह वा निर्बल ग्रह हों वही प्रसूतागृह वा खाटका अंग निर्बल वा फटा टूटा पाया कहना, और जिस घरमें शुभ तथा बलवान् ग्रह पड़े हों वह अंग पुष्ट जानना ॥११॥

यत्र राहुस्तत्र शिरो मङ्गले भूमिखण्डनम् ॥
रविस्थाने भवेद्दीपः शनौ लोहं निगद्यते ॥ १२ ॥

जन्मलग्नमें जिस स्थानमें राहु हो उस दिशामें बालकका शिर कहना चाहिये, जिस दिशामें मंगल हो वहांकी भूमि खंडित वा गढ़हा कहना चाहिये । जहां सूर्य हो उस दिशामें दीपक कहना, जहां शनि हो वहां लोहा धरा हुआ कहना । इस प्रकार बुद्धिसहित वर्णन करना; दिशा विचार इस प्रकार है कि, लग्नसे पूर्व दिशा चतुर्थस्थान उत्तरदिशा दशमस्थान दक्षिण और सप्तमस्थानको पश्चिम दिशा जानना चाहिये ॥१२॥

छागे सिंहे वृषे लग्ने वृश्चिके नालवेष्टितः ॥
नृलग्ने दक्षिणे पार्श्वे वामे स्त्रीलग्नके तथा ॥ १३ ॥

यदि मेष, सिंह, वृष, वृश्चिक लग्नोंमें बालकका जन्म हो तो नाल लिपटा हुआ जन्म कहना, यदि पुरुष[1] लग्न हो तो दाहिनी ओर और स्त्री लग्न हो तो बाईं ओर नाल लिपटा हुआ जानना ॥ १३ ॥

छागे सिंहे वृषे लग्ने तत्स्थे मन्देऽथवा कुजे ॥
राश्यंशसदृशे गात्रे जायते नालवेष्टितः ॥ १४ ॥

यदि मेष, सिंह, वृषलग्नमें शनैश्चर वा मंगल हो तो लग्नमें स्थित नवांशकको राशिके सदृश अंगमें नाल लिपटा हुआ जानना, और अंगका ज्ञान नीचे लिखे चक्रसे करना जिस लग्नमें बालकका जन्म हो वही शिर जानना ॥ १४ ॥

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शिर | मुख | बाहु | हृदय | उदर | कटि | बस्ति | लिंग | ऊरू | जानु | ज. | च |

पितुर्जातः परोक्षेऽस्य लग्नमिन्दावपश्यति ॥
विदेशस्थस्य चरभे मध्याद्भ्रष्टे दिवाकरे ॥ १५ ॥

यदि चन्द्रमा जन्मलग्नको नहीं देखता हो तो पिताके परोक्षमें बालकका जन्म कहना और मध्यभ्रष्ट अर्थात्

१ मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन, कुंभ यह राशि पुरुष हैं शेष स्त्री हैं ७ श्लोक देखो ।

दशमस्थानसे रहित नौमें, आठवें, ग्यारहवें, बारहवें स्थानमें यदि सूर्य चरराशि मेष, कर्क, तुला, मकरका हो तो जन्मसमय बालकका पिता विदेशमें जानना ॥ १५॥

स्थिरे सूर्येऽष्टमे धर्मे लाभे वाचान्त्यसंस्थिते ॥
न पश्येच्चन्द्रमा लग्न परोक्षे जायते शिशुः ॥१६॥

यदि स्थिरराशि वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभका सूर्य आठवें, नौवें, दशवें, बारहवें स्थानमें हो और चन्द्रमा लग्नको न देखता हो तो भी पिताके परोक्षमें बालकका जन्म कहना, परन्तु पिताको स्वदेशमेंही स्थित

उदयस्थेऽपि वा मन्दे कुजे वाऽस्तं समागते ॥
स्थिते वान्तःक्षपानाथे शशाङ्कसुतशुक्रयोः॥१७॥

यदि लग्नमें शनि हो अथवा सप्तम स्थानमें मंगल हो अथवा बुध शुक्रके बीचमें चन्द्रमा स्थित हो तो इन तीन योगोंसे भी पिताके परोक्षमेंही जन्म कहना ॥ १७॥

क्रूरर्क्षगतावशोभनौ सूर्याद्द्यूननवात्मजास्थितौ ॥
बद्धस्तु पिता विदेशगः स्वे वा राशिवशादथो पथि ॥ १८ ॥

यदि पापग्रह (शनि मंगल) क्रूरराशि (मेष, सिंह,

---

१ देखो ८० श्लोक।

वृश्चिक, मकर, कुंभ) में सूर्यसे सातवें, नौवें, पांचवें स्थानमें स्थित हों तो बालकका पिता बंधनमें जानना यदि सूर्य चरराशिमें हो तो परदेशमें, स्थिरराशिमें हो तो निजदेशमें, और द्विस्वभाव ३।६।९।१२।राशिमें हो तो मार्गमें बँधा कहना चाहिये ॥ १८ ॥

शीर्षोदये विलग्ने मूर्धाप्रसवोन्यथोदये चरणौ ॥
उभयोदयेचहस्तौशुभदृष्टः शोभनोन्यथाकष्टः १९

यदि जन्मलग्न शीर्षोदय हो तो शिरसे, यदि पृष्ठोदय लग्नमें जन्म हो तो चरणोंसे, यदि उभयोदय लग्नमें जन्म हो तो हाथोंसे प्रथम बालकका जन्म कहना यदि लग्नपर शुभग्रहोंकी दृष्टि हो तो सुखपूर्वक और पापग्रहोंकी दृष्टि हो तो कष्टसे जन्म हुआ जानना ॥ १९ ॥

न लग्नमिन्दुं च गुरुर्निरीक्षते न वा शशाङ्कं रविणा समागतम् ॥ सपापकोऽर्केण युतोऽथवा-शशी परेणजातं प्रवदन्ति निश्चयात् ॥ २० ॥

यदि बृहस्पति लग्न और चन्द्रमाको न देखता हो तो वह जारस उत्पन्न हुआ जानना, अथवा सूर्य चन्द्र एक राशिमें हों और उनपर बृहस्पतिकी दृष्टि न हो अथवा

सूर्य चन्द्रयह दोनों पापग्रह (शनि मंगल) से युक्त हों तो निश्चयही पतिसे अन्य का बालक जानना इसमें विशेष न कहकर बालकके लक्षणादिका वर्णन करते हैं ॥ २० ॥

**पूर्णे शशिनि स्वराशिगे सौम्ये लग्नगते गुरौ सुखे ॥ लग्ने जलजेऽस्तगेऽपि वा चन्द्रे पोतगते प्रसूयते ॥ २१ ॥**

यदि पूर्ण चन्द्रमा अपनी कर्कराशिमें स्थित हो, लग्नमें बुध, चतुर्थभावमें बृहस्पति, अथवा लग्नमें जलचरराशि स्थित हों और सप्तमस्थानमें चंद्रमा हो तो बालकका जन्म नौकामें वा पुल ऊपर कहना ॥ २१ ॥

**आप्योदयमाप्यगः शशी सम्पूर्णः समवेक्षतेऽथवा ॥ मेषूरणबन्धुलग्नगः स्यात्सूतिः सलिले न संशयः ॥ २२ ॥**

जन्मलग्न और चन्द्रमा जलचरराशिमें स्थित हों अथवा पूर्ण दृष्टिसे पूर्णचन्द्रमा लग्नको देखता हो अथवा जलचर राशिका चंद्रमा दशवें चौथे और लग्नमें हो तो भी बालकका जन्म जलके ऊपर कहना चाहिये ॥ २२ ॥

---

१ श्लोक ७९ देखो।

उदयोडुपयोर्व्ययस्थिते गुप्त्यां पापनिरीक्षिते शनौ
अलिकर्कयुते विलग्नगे सौरे शीतकरेक्षितेऽवटे २३॥

जो शनिश्चर और पापग्रह लग्न और चंद्रमासे बारहवें स्थानमें देखते हों तो बालकका जन्म बंधनागारमें कहना चाहिये, यदि वृश्चिक वा कर्कका शनि लग्नमें स्थित हो और चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो खाई वा खातेमें जन्म कहना चाहिये ॥ २३ ॥

मन्देऽब्जगते विलग्नगे बुधसूर्येन्दुनिरीक्षिते
क्रमात् ॥ क्रीडाभवने सुरालये प्रवदेज्जन्म च
सोषरावनौ ॥ २४ ॥

जो लग्नमें शनि जलचरराशिमें[1] स्थित हो और उसपर बुधकी दृष्टि हो तो नृत्यशालामें जन्म कहना, जो शनिपर सूर्यकी दृष्टि हो तो देवालयमें, चंद्रमाकी दृष्टि हो तो ऊपर भूमिमें बालकका जन्म कहना चाहिये ॥ २४ ॥

नृलग्नगं प्रेक्ष्य कुजः श्मशाने रम्ये सितेन्दू गुरु-
रग्निहोत्रे ॥ रविर्नरेन्द्रामरगोकुलेषु शिल्पालये
ज्ञः प्रसवं करोति ॥ २५ ॥

---

१ कर्क मीन मकरका उत्तरार्द्ध जलचर है श्लो० ७९।२ श्लो० देखो.

जो पुरुषराशिमें स्थित शनैश्चर लग्नमें हो और उसपर मंगलकी दृष्टि हो तो श्मशानमें जन्म कहना, और पुरुषराशिमें स्थित शनिको शुक्र चंद्रमा देखता हो तो सुघर रमणीयस्थानमें जन्म कहना चाहिये, बृहस्पति देखै तो हवनशालामें, सूर्य देखै तो राजमंदिर वा देवालयमें, वा गोशालामें, बुध देखै तो शिल्पस्थान चित्रशाला कारीगरीके स्थानमें बालकका जन्म कहना ॥ २५॥

राश्यंशसमानगोचरे मार्गे जन्म चरे स्थिरे गृहे ॥ स्वर्क्षांशगते स्वमन्दिरे बलयोगात्फलमंशकर्क्षयोः ॥ २६ ॥

और लग्नराशिनवांशकके समान पृथिवीमें जन्म कहना, यदि चरराशिके नवांशकमें जन्म हो तो घरमें ही जन्म कहना, राशि और नवांशक इन दोनोंमें जो बलिष्ठ हो उसके अनुसार फल कहना परंतु पूर्वयोगोंके अभावमें इस योगसे फल कहना ॥ २६ ॥

आरार्कजयोस्त्रिकोणयोश्चन्द्रेऽस्ते चविसृज्यतेऽम्बया ॥ दृष्टेमरराजमंत्रिणा दीर्घायुः सुखभाक् च स स्मृतः ॥ २७ ॥

यदि मंगल शनि त्रिकोण ( नौवें पांचवें ) स्थानमें स्थित हों और चंद्रमा सप्तम स्थानमें स्थित हो तो वह बालक मातासे पृथक् हो जाता है यदि ऐसे योगमें चन्द्रमा पर बृहस्पतिकी दृष्टि हो तो माताके त्यागने पर भी बालक दीर्घ आयुवाला होकर सुखी होता है ॥ २७ ॥

पापेक्षिते तुहिनगावुदये कुजेऽस्ते त्यक्तो विनश्यति कुजार्कजयोस्तथाऽऽये ॥ सौम्येऽपि पश्यति तथाविधहस्तमेति सौम्येतरेषु परहस्तगतोऽप्यनायुः ॥ २८ ॥

जो चन्द्रमा लग्नमें हो और उसपर पापग्रहोंकी दृष्टि हो और सप्तमस्थानमें मंगल हो तो मातासे त्यागा हुआ वह बालक मृतक हो जाता है तथा लग्नमें स्थित चंद्रमापर यदि पापग्रहकी दृष्टि हो और मंगल शनि ग्यारहवें हों तो भी पूर्वोक्त फल कहना और यदि ऐसे योगको शुभग्रह देखते हों तो उसी ग्रहके वर्ण ब्राह्मणादिके हाथ वह बालक लगै, और दीर्घायु हो और जो पाप और शुभ दोनों प्रकारके ग्रह देखते हों तो किसीके हाथ लगकर वह बालक मृतक हो जाय ॥ २८ ॥

पितृमातृगृहेषु तद्बलात्तरुशालादिषु नीचगैः शुभैः ॥ यदि नैकगतैस्तु वीक्षितौ लग्नेन्दू विजने प्रसूयते ॥ २९ ॥

जो पितृसंज्ञक ग्रह सूर्य और शनि बलिष्ठ हों तो पिता वा ताऊ च्चाके घरमें बालकका जन्म जानना और जो मातृसंज्ञक ग्रह (चन्द्र शुक्र) बलवान् हों तो माता वा मामी मौसीके घर बालकका जन्म हुआ जानना यदि शुभग्रह नीच राशिमें स्थित हों तो वृक्षपर, वृक्षके नीचे, काष्ठके घर वा पर्वत नदी आदिमें जन्म कहना, यदि लग्न और चन्द्रमाको एक भी ग्रह न देखता हो तो निर्जन स्थानमें बालकका जन्म हुआ जानना यदि लग्न और चन्द्रमाको बहुतसे ग्रह देखते हों तो बहुत मनुष्योंके समुदायमें जन्म हुआ जानना ॥ २९ ॥

मन्दर्क्षांशे शशिनि हिबुके मन्ददृष्टेऽब्जगे वा संयुक्ते वा तमसि शयने नीचसंस्थैश्च भूमौ ॥ यद्वद्राशिर्व्रजति हरिजं गर्भमोक्षन्तु तद्वत् पापैश्चन्द्रात्स्मरसुखगतैःक्लेशमाहुर्जनन्याः ॥३०॥

यदि चन्द्रमा बालकके जन्मसमय शनैश्चरकी राशिमें नवांशकमें हो अथवा चतुर्थस्थानमें स्थित चन्द्रमा शनि

से युक्त हो तो अँधेरेमें जन्म हुआ जानना। और यदि इन्हीं योगोंमें सूर्य बलवान् हो मंगल देखता हो तो सब योगोंका फल कट जाता है अर्थात् दीपक जलते स्थानमें उजालेमें जन्म कहना, यदि चंद्रमा लग्नस्थानमें चौथे स्थानमें नीच राशि (वृश्चिक) का हो तो भूमिपर जन्म जानना और शीर्षोदयराशि जन्म लग्नमें हों तो बालकका मुख जन्म समय ऊपरको जानना पृष्ठोदयमें जन्म हो तो पृथिवीकी ओर मुख जानना और उभयोदयी मीनलग्नमें जन्म हो तो तिरछा जन्म कहना, यदि लग्न वा नवांशक वा लग्नमें स्थित वक्रग्रह हों तो उलटे पौरोंसे बालकका जन्म कहना और पापग्रहसे युक्त चन्द्रमा चौथे वा सातवें स्थानमें हो तो बालकके जन्म समय माताको कष्ट हुआ जानना ॥ ३० ॥

चतुर्थे दशमे सौम्याः सुखेन प्रसवंकरा ॥
त्रिकोणास्तगताःपापाःकष्टतःप्रसवंकराः ॥ ३१ ॥

यदि जन्मलग्नसे चौथे और दशमें स्थानमें शुभग्रह हों तो सुखसे प्रसव हुआ जानना और त्रिकोण ५।९ तथा सातवें स्थानमें पापग्रह हों तो प्रसव कालमें माता को बहुत कष्ट हुआ जानना ॥ ३१ ॥

स्नेहः शशाङ्कादुदयाच्च वर्तिर्दीपोऽर्कयुक्तर्क्षव-शाच्चराद्यः ॥ द्वारञ्च तद्वास्तुनि केन्द्रसंस्थैर्ज्ञेयं ग्रहैर्वीर्यसमन्वितैर्वा ॥ ३२ ॥

चन्द्रराशिसे दीपकके तेलका विचार जानना चाहिये यदि चंद्रमा राशिके प्रारंभमें हो तो दीपकको तेलसे पूर्ण कहना आधी राशिपर हो तो आधा राशिके समाप्त होनेमें स्थित हो तो दीपकमें थोड़ा तेल कहना चाहिये, अथवा चन्द्रमा पूर्ण हो तो थोड़ा तेलसे पूर्ण मध्य हो तो आधा और क्षीण चन्द्र हो तो थोड़ा तेल जानना, यह विचार इस प्रकारसे करना, और जन्मलग्नसे दीपककी बत्तीका भी विचार करना, यदि लग्नके प्रारंभमें जन्म हो तो पूरीबत्ती आधी लग्न बीती हो तो आधीबत्ती यदि लग्नान्तमें जन्म हो तो बत्ती समाप्त हुई कहनी और सूर्यके चरादि राशिमें स्थित होनेसे दीपकका प्रज्वलित होना वर्णन करै यथा "चरलग्नेकरेदीपःस्थिरे-कैंतत्र संस्थितः। द्विस्वभावं यदा लग्नं करेण परिचालितः ॥ १ ॥" अर्थात यदि सूर्य चरराशिमें हो तो दीपक को हाथसे उठाकर किसीने दिखाया है ऐसा कहना,

यदि सूर्य स्थिरराशिमें हो तो दीपक अपने स्थान पर स्थित कहना, द्विस्वभावराशिमें हो तो एक स्थानसे उठाकर दूसरे स्थानमें रक्खा कहना, मेषादिराशिक्रमसे चर स्थिर द्विस्वभाव जाननी। और सूर्यराशिकी जो दिशा हो उसीमें दीपक कहना। सूर्य आठ पहरमें आठों दिशाओंमें घूमता है, वह उस समय जिसदिशामें हो उसीमें दीपक कहना वह दिशा पूर्वादिक्रमसे जाननी, और राशिके रंगकी समान तेलका रंग कहना, यदि वह राशि शुभग्रहसे युक्त हो तो तेल निर्मल कहना, पापग्रहसे युक्त हो तो तेल मलिन कहना और जो ग्रह केन्द्रमें हो तो उसकी जो दिशा हो उस ओरको सूतिकाके घरका द्वार कहना यदि अनेक ग्रह स्थित हों तो उनमें जो बलवान् ग्रह हो उसीकी दिशाका द्वार जानना चाहिये ॥ ३२ ॥

लग्नेन्दुमध्ये शनौ मिष्टतैलं सूर्ये भवेत्तस्य घृतस्य दीपम् ॥ शेषा ग्रहास्तत्कटुकं च तैलमेवं प्रसूतौ खलु दीपमाह ॥ ३३ ॥

लग्न वा चन्द्रमाकी राशिके मध्यमें शनि हो तो

दीपकमें मीठातेल जानना, यदि मध्यमें सूर्य हो तो दीपकमें घृत जानना, यदि दूसरे ग्रह मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र हों तो कडुवातेल कहना इस प्रकार तेलका विचार करना ॥ ३३ ॥

जीर्णं संस्कृतमर्कजे क्षितिसुते दग्धं नवं शीतगौ काष्ठाढ्यं न दृढं रवौ शशिसुते तन्नैकशिल्पोद्भवम् ॥ रम्यं चित्रयुतं नवं च भृगुजे जीवे दृढं मंदिरं चक्रस्थैश्च यथोपदेशरचनां सामन्तपूर्वां वदेत् ॥ ३४ ॥

यदि जन्म समयमें शनैश्चर बलवान् हो तो प्रसूतिकाका घर पुराना और अच्छा जानना । मंगल बलवान् हो तो जला हुआ, चन्द्रमा बलवान् हो तो नया अथवा लीपा पोता साफ सुथरा जानना, सूर्य बलवान् हो तो कच्चाकाष्ठ से भरा हुआ, बुध हो तो रमणीय चित्रकारी संयुक्त नवीन गृह जानना । यदि बृहस्पति बलवान् हो तो वह मंदिर पुष्ट कहना, और जिस ग्रहसे घरका विचार किया हो उसके निकट वा आगे पीछे जितने ग्रह स्थित हों इतनी ही कोठरियां उसघरमें आगे पीछे बनी जाननी । यदि उच्चका बृहस्पति दशम-

भावमें स्थित हो तो तीन चार कोठेका मंदिर कहना चाहिये, यदि लग्नमें धनराशि बलवान् हो तो तीन-शालाका, द्विस्वभावराशि बलवान् हो तो दो कोठेका स्थान कहना चाहिये। और ग्रहयोगविचार बुद्धिसे घरके समीप शिवालय, देवमंदिर, कूप, वृक्षादि को भी कथन करना चाहिये ॥ ३४ ॥

लग्ननवांशपतुल्यतनुः स्याद्वीर्ययुतग्रहतुल्यवपुर्वा॥
चन्द्रसमेतनवांशपवर्णःकादिविलग्नविभक्तभगात्रः ३५

अब बालकके रंगरूपका वर्णन करते हैं। जन्मलग्न जो नवांशक हो उसके स्वामीके रंगकी समान बालकका रूप कहना और जो ग्रह बहुत बलवान् हो उस ग्रहके समान शरीरकी आकृतिका वर्णन करना ग्रहोंका स्वरूप अगले श्लोकमें कहैंगे चन्द्रमा जिस नवांशकपर हो उसके स्वामीके समान ४० वें श्लोकानुसार वर्ण कहना ग्रह यदि दीर्घराशिका स्वामी हो वा दीर्घराशि में स्थित हो तो उस राशिकी समान अंग दीर्घ हो, उसी प्रकार ह्रस्व से ह्रस्व, मध्यसे मध्य कहना ॥ ३५ ॥

ग्राहोंका स्वरूप

मधुपिङ्गलदृक् चतुरस्रतनुः पित्तप्रकृतिः सविता-

लपकचः ॥ तनुवृत्ततनुर्बहुवातकफः प्राज्ञश्च शशी मृदुवाक् शुभदृक् ॥ ३६ ॥

शहदके समान नेत्रवाला, चौखूंटा शरीर अर्थात् दोनों हाथ फैलाकर जितना लम्बा हो उतनाही शिरसे पांवतक, पित्तप्रकृति, छोटे छोटे केश इस प्रकार सूर्यका स्वरूप जानना चाहिये। दुर्बलसब अंग गोलाकारवातक-फप्रकृतिवाला बुद्धिमान् कोमलवाणी सुघर नेत्रवाला चन्द्रमाका स्वरूप जानना चाहिये ॥ ३६ ॥

क्रूरदृक् तरुणमूर्तिरुदारः पैत्तिकः सुचपलः कृश-मध्यः श्लिष्टवाक् सततहास्यरुचिर्ज्ञः पित्तमारुत-कफप्रकृतिश्च ॥ ३७ ॥

क्रूरदृष्टि, सदा युवा अवस्थावाला, चंचलस्वभाव, मध्यका अंग पतला, ऐसा मंगलका स्वरूप है। सुन्दर अंग गद्गदवाणी, निरन्तर हास्यस्वभाव (मसखरापन), वातपित्तकफप्रकृतिवाला बुधका स्वरूप जानना ॥३७॥

बृहत्तनुः पिङ्गलमूर्द्धजेक्षणो बृहस्पतिः श्रेष्ठमतिः कफात्मकः ॥ भृगुः सुखी कान्तवपुः सुलोचनः कफानिलात्मा सितवक्रमूर्द्धजः ॥ ३८ ॥

बहुत लम्बा शरीर, भूरेनेत्र, भूरेकेश, उत्तमबुद्धि कफ प्रकृति ऐसा बृहस्पतिका स्वरूप जानना, सुखमय सुन्दर रमणीय शरीर, सुन्दरनेत्र, कफवातप्रकृतिवाला, टेढ़े सफेद केशवाला शुक्रका शरीर जानना ॥ ३८ ॥

मन्दोऽलसः कपिलदृक्‌ कृशदीर्घगात्रः स्थूलद्विजः परुषरोमकचोऽनिलात्मा ॥ स्नाय्वस्थ्यसृक्त्वगथ शुक्रवसा च मज्जा मन्दार्कचन्द्रबुधशुक्रसुरेज्य-भौमाः ॥ ३९ ॥

शनिके स्वभावमें आलस्य, कंजीआंखें, दुर्बल ऊंचा शरीर, मोटे दांत, रूखे बाल और बातकी प्रकृति है। अब ग्रहोंकी धातुओंका वर्णन करते हैं कि, शनिकी धातु नस, सूर्यकी अस्थि, चन्द्रका रुधिर, बुधकी त्वचा, शुक्रका वीर्य, बहस्पतिकी मेदा और मंगलकी मज्जा जानना चाहिये ॥ ३९ ॥

रक्तश्यामो भास्करो गौर इन्दुर्नात्युच्चाङ्गो रक्त-गौरश्च वक्रः ॥ दूर्वाश्यामो ज्ञो गुरुर्गौर गात्रः श्यामःशुक्रो भास्करिःकृष्णदेहः ॥ ४० ॥

सूर्यका रक्तश्यामवर्ण, चन्द्रमाका गोरा, मंगलका कमलकी समान लाल और गोरा, शरीर छोटा, बुधका रंग दूर्वादलकी समान, बृहस्पतिका गोरा रंग, शुक्रका श्यामवर्ण बहुत काला नहीं और शनैश्चरका कृष्णवर्ण देह कहना ॥ ४० ॥

कं दृक्छ्रोत्रनसाकपोलहनवो वक्त्रं च होरादयस्ते
कण्ठांसकबाहुपार्श्वहृदयेक्रोडानि नाभिस्ततः ॥
बस्तिः शिश्नगुदे ततश्च वृषणावूरू ततो जानुनी
जंघेंघ्रीत्युभयत्र वाममुदितैर्द्रेष्काणभागैस्त्रिधा॥४१॥

जन्मलग्नके द्रेष्काणवशसे तीन भागोंमें चिह्नादि होते हैं यदि लग्नका प्रथम द्रेष्कण हो तो वह लग्न शिर, दूसरा बारहवां घर दोनों नेत्र, तीसरा ग्यारहवां घर दोनों कान, चौथा दशवां घर नासिका, पांचवां नौमा घर दोनों कपोल, छठा आठवां घर ठोडी, सातवां घर मुख, तथा लग्नके दूसरे द्रेष्काणमेंलग्नकंठ, दूसरा बारहवां घर कंधे। तीसरे ग्यारहवां घर दोनों भुजा चौथा दशवां घर दोनों बगल पांचवां नौमा घर हृदय, छठा आठवां घर पेट, सप्तम घर नाभि जानना । यदि लग्नका

तीसरा द्रेष्काण हो तो लग्न पेडुस्थान, दूसरा बारहवां घर लिंग और गुदा, तीसरा ग्यारहवां अंडकोश, चौथा दशवां घर ऊरु. पंचमनवम घर जानु, षष्ठ अष्टम घर घुटना सप्तमघर चरण जानना। यहां लग्नसे सप्तमघरके अर्धभाव पर्यन्त वामअंग जानना, और सप्तमार्धसे द्वादशभाव पर्यन्त दाहिना अंग जानना चाहिये ॥ ४१ ॥

तस्मिन् पापयुते व्रणं शुभयुते दृष्टं च लक्ष्मादि-शेत्स्वर्क्षांशेस्थिरसंयुतेषु सहजः स्यादन्यथाऽ-गन्तुकः ॥ मंदेऽश्मानिलजोग्निशस्त्रविषजो भौमे बुधे भूर्भुवः सूर्ये काष्ठचतुष्पदेषुहिमगौशृंग्यब्ज-जोन्यैःशुभम् ॥ ४२ ॥

पूर्वमें कहे द्रेष्काणके विभागसे संपूर्ण अंगोंको जान-कर जिसराशिमें पापग्रह स्थित हों वहां फोड़ा फुन्सी आदि कहना यदि शुभग्रहयुक्त हो वा शुभग्रहोंकी दृष्टि हो तो ल्हसन तिल मस्सा आदि चिह्न कहना, व्रण वा चिह्न करनेवाला ग्रहअपनी राशिके नवांशमें वा स्थिर राशिमें हो तो जन्महीसे चिह्नका कथन करना चाहिये। यदि चरराशिनवांशमें हो तो पीछेसे चिह्न होगा ऐसा

कहना चाहिये। यदि शनि व्रणका करनेवाला हो तो पत्थर पवन वा अग्निद्वाराचिह्न होना कथन करना, यदि मंगल हो तो अग्नि शस्त्र वा विषद्वारा चिह्न कहना बुध हो तो भूमिपर गिरकर चिह्न होगा सूर्य हो तो काठकी कोई वस्तु लगनेसे चिह्न होगा वा चौपायेके प्रहारसे व्रण कहना। चन्द्रमा हो तो सींगवाले अथवा जलचरजीवसे व्रणादि कहना। यदि शुभग्रह अन्यत्र पड़ें तो व्रणकारक नहीं होते ॥ ४२ ॥

समनुपतिता यस्मिन्भागे त्रयः सबुधा ग्रहा भवतिनियमात्तस्यावाप्तिःशुभेष्वशुभेपिवा ॥ व्रण-कृदशुभःषष्ठे देहे तनोर्भसमाश्रितेतिलकमशकैर्दृष्टःसौम्यैर्युतश्चसलक्ष्मवान् ॥ ४३ ॥

बुधके सहित तीन ग्रह जिस भागमें स्थित हों उस अंगमें शुभ अशुभ चिह्न अवश्य जानना उनमें जो ग्रह अधिक बलवान हो उसकी दशामें वह चिह्न वा व्रण अवश्य होगा। यदि पापग्रह छठे स्थानमें हो तो देहमें शिर मुख बाहु हृदय उदर कटि बस्ति लिङ्ग ऊरु जानु जंघा चरणादिमें क्रमसे १४ चक्रानुसार व्रण कहना यदि

पापग्रह शुभग्रहसे युक्त हों वा पापग्रहपर शुभग्रहकी दृष्टि हो तो ल्हसन आदिका चिह्न जानना ॥ ४३ ॥

अर्कसूनुः कुजो राहुः पञ्चमस्थः प्रसूतये ॥
लशुनंवामकुक्ष्यांच गर्गाचार्येणभाषितम् ॥४४॥

यदि जन्मकालमें शनि, मंगल, राहु, पंचम घरमें हों तो बांई कोखमें ल्हसन कहना यह गर्गाचार्यने कहा है॥४४॥

दशमे बुधजीवौ च सूर्यभौमौ च कण्टके ॥
तृतीयैकादशे पापे बालकस्य षडङ्गुलीः ॥ ४५ ॥

यदि बुध बृहस्पति दशमस्थानमें हों १।४।७।१० सूर्य मंगल, तीसरे ग्यारहवें घरमें पापग्रह हों तो बालककी छः अंगुली जाननी ॥ ४५ ॥

द्वादशे चन्द्रभौमौ वा वामनेत्रं विनश्यति ॥
द्वादशे रविराहू च दक्षचक्षुर्विनाशयेत् ॥ ४६ ॥

यदि बारहवें स्थानमें चंद्र मंगल हों तो बांई आंखका विनाश करते हैं यदि बारहवें सूर्य और राहु हों तो दाहिना नेत्र नष्ट हो जाता है ॥ ४६ ॥

सहजस्थो यदा शुक्रो सिंहे मेषे बृहस्पतिः ॥
दशमेरविभौमौचमूकोभवतिबालकः ॥ ४७ ॥

यदि तीसरे स्थानमें शुक्र हो सिंह और मेषका बृहस्पति हो दशवें घरमें सूर्य मंगल हों तो बालक गूंगा होता है ॥ ४७ ॥

सिंहलग्ने यदा जातो यामित्रे च शनैश्चरः ॥
ब्रह्मपुत्रोपिसंजातोम्लेच्छोभवतिबालकः ॥ ४८ ॥

यदि सिंह लग्नमें जन्म हो और सप्तम स्थानमें शनि हो तो ब्राह्मणके घरमें जन्म होनेपर भी वह बालक म्लेच्छ हो जाता है ॥ ४८ ॥

सुतमदननवान्त्यरन्ध्रलग्नेष्वशुभयुतोमरणायशीतरश्मिः ॥ भृगुसुतशशिपुत्रदेवपूज्यैर्यदिबलिभिर्नबिलोकितो युतोवा ॥ ४९ ॥

जो पांचवें सातवें नवें बारहवें आठवें तथा लग्नमें इनमेंसे किसी स्थानमें क्षीणचन्द्रमा पापग्रहयुक्त हो और बलवान् होकर शुक्र, बुध, बृहस्पति इनमेंसे कोई शुभग्रह

न देखता हो तो वा इनसे युक्त न हो तो वह बालक मर जाय ॥ ४९ ॥

कृष्णपक्षे दिवाजन्म शुक्लपक्षे यदा निशि ॥
षष्ठाष्टमे भवेच्चन्द्रःसर्वारिष्टं निवारयेत् ॥ ५० ॥

यदि कृष्णपक्षमें दिनको जन्म हो और शुक्लपक्षमें रातको जन्म हो तथा छठे और अष्टम स्थानमें चन्द्रमा हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट निवारण होते हैं ॥ ५० ॥

चन्द्राष्टमं च धरणीसुतः सप्तमं च राहुर्नवं च शनिर्जन्मनिगुरुस्तृतीये ॥ अर्कस्तु पञ्चमे भृगुः षष्ठे बुधश्चतुर्थे जातो न जीवति नरः प्रवदन्ति सन्तः ॥ ५१ ॥

यदि अष्टम स्थानमें चन्द्रमा हो, सातवें मंगल हो, नौमें राहु, जन्मस्थानमें शनि, तीसरे बृहस्पति, पांचवें सूर्य, छठे शुक्र, चौथे बुध, हों तो वह बालक नहीं जीता ऐसा पूर्वाचार्य कहते हैं ॥ ५१ ॥

मूर्तौ शुक्रबुधौ यस्य केन्द्रे चैव बृहस्पतिः ॥
दशमोऽङ्गारकोयस्यसज्ञेयःकुलदीपकः ॥ ५२ ॥

जिस बालकके जन्मकालमें शुक्र बुध हों केन्द्रस्थान-
१।४।७।१० में बृहस्पति हो तथा दशमें मंगल हो तो
उस बालकको कुलका दीपक जानना चाहिये ॥ ५२ ॥

लग्नेशुक्रोबुधोनैवनास्तिकेन्द्रेबृहस्पतिः ॥
दशमोऽङ्गारकोनैवसजातःकिंकरिष्यति ॥ ५३ ॥

जिस बालकके जन्म लग्नमें बुध शुक्र न हों केन्द्रमें
बृहस्पति न हो दशम घरमें मंगल न हो उसका जन्म
निरर्थक है ॥ ५३ ॥

षष्ठे च द्वादशे राशौ यदा पापग्रहो भवेत् ॥
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थेदशमेपितुः ॥ ५४ ॥

जो छठे और बारहवें घरमें पापग्रह हो तो माताको
भयकारक होता है चौथे दशवें स्थानमें पापग्रह हों तो
पिताको अरिष्ट होता है ॥ ५४ ॥

लग्नस्थानेयदासौरिःषष्ठे भवति चन्द्रमाः ॥
कुजस्तुसप्तमस्थानेपितातस्य न जीवति ॥५५॥

जो लग्नमें शनि छठे घरमें चन्द्रमा सातवें स्थानमें मंगल हो तो उस बालकका पिता नहीं जीता ॥ ५५॥

दशमस्थो यदा भौमःशत्रुक्षेत्रस्थितोयदि ॥
म्रियतेतस्यबालस्यपिताशीघ्रंनसंशयः ॥ ५६ ॥

यदि दशवें स्थानमें मंगल शत्रु ग्रहकी राशिमें स्थित हो तो निःसन्देह उस बालकका पिता शीघ्र ही नष्ट होता है ॥ ५६ ॥

लग्नेजीवो धनेमन्दो रविभौंमस्तथा बुधः ॥
विवाहसमये तस्यबालस्यम्रियतेपिता ॥ ५७ ॥

यदि लग्नमें बृहस्पति दूसरे स्थानमें शनि, सूर्य, मंगल, बुध हों तो बालकके विवाह समयमें उसका पिता मृतक हो जाय ॥ ५७ ॥

सिंहलग्ने यदा भौमः पञ्चमे च निशाकरः ॥
व्ययस्थानेयदाराहुस्स जातः कुलदीपकः ॥५८॥

जो सिंह लग्नमें मंगल पांचवें स्थानमें चन्द्र और बारहवें स्थानमें राहु हो तो वह बालक कुलदीपक होता है ॥ ५८ ॥

लग्ने वा सप्तमे भौमः पञ्चमे च दिवाकरः ॥
व्ययस्थानेयदाराहुर्विख्यातःसनसंशयः ॥ ५९ ॥

जो लग्नस्थान वा सप्तम स्थानमें मंगल हो पंचममें सूर्य और बारहवें स्थानमें राहु हो तो वह बालक निश्चय प्रसिद्ध पुरुष होता है ॥५९॥

पातालस्थो यदा राहुश्चेन्दुः षष्ठाष्टमेऽपि च ॥
पापदृष्टोऽपिशेषेणसद्यःप्राणहरःशिशोः ॥ ६० ॥

यदि जन्म लग्नसे सप्तमस्थानमें राहु हो छठे वा आठवें चन्द्रमा हो और पापग्रहोंकी इसपर दृष्टि हो तो शीघ्रही बालकका प्राण जाता है ॥ ६० ॥

जन्मलग्ने यदा राहुः षष्ठो भवति चन्द्रमाः ॥
जातोमृत्युमवाप्नोतिकुदृष्टयांत्वपमृत्युना ॥ ६१ ॥

यदि जन्मलग्नमें राहु, छठे स्थानमें चन्द्रमा हो तो बालककी शीघ्र मृत्यु होती है और यदि जन्मलग्नपर किसी ग्रहकी कुदृष्टि होय तो अकाल मृत्यु होती है ॥ ६१ ॥

त्रिभिः स्वस्थैर्भवेन्मन्त्रीत्रिभिरुच्चैर्नराधिपः ॥
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरस्तगतैर्जडः ॥ ६२ ॥

जन्मकालमें तीन ग्रह अपने घरमें स्थित हों तो वह बालक मंत्री होता है तीन ग्रह उच्चके हों तो राजा होता है तीन ग्रह नीच स्थानके हों तो दास होता है और तीन ग्रह अस्तके हों तो मूर्ख होता है ॥ ६२ ॥

जन्मलग्नेयदा भौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ॥
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्यदि रक्षति शङ्करः ॥ ६३ ॥

जो जन्मलग्नमें मंगल आठवें बृहस्पति हों तो शंकरके रक्षा करनेपर भी बारहवें वर्षमें बालक मर जाता है॥६३॥

शनिक्षेत्रे यदा सूर्यो भानुक्षेत्रे यदा शनिः ॥
वर्षे च द्वादशे मृत्युर्देवो वै रक्षिता यदि ॥६४॥

जो शनिके घरमें सूर्य और सूर्यके घरमें शनि हो चाहै देव भी रक्षा करै तो भी वह बालक बारहवें वर्षमें मर जाता है ॥ ६४ ॥

षष्ठाष्टमस्तथा मूर्तौ जन्मकाले यदा बुधः ॥
चतुर्थवर्षे मृत्युश्च यदि रक्षति शङ्करः ॥ ६५ ॥

यदि जन्मसमय छठे आठवें तथा लग्नमें बुध हो तो शंकरके रक्षा करने पर भी चौथे वर्ष बालककी मृत्यु होती है ॥ ६५ ॥

भौमक्षेत्रेयदाजीवः षष्ठाष्टासु च चन्द्रमाः ॥
वर्षेऽष्टमेऽपिमृत्युर्वैईश्वरोरक्षितायदि ॥ ६६ ॥

जो मंगलकी (१।८) राशिमें बृहस्पति स्थित हो छठे तथा आठमें चन्द्रमा हो तो ईश्वरकी रक्षा करनेपर भी बालक आठवें वर्षमें मृत्यु पाता है ॥ ६६ ॥

दशमोपि यदा राहुर्जन्मलग्ने यदा भवेत् ॥
वर्षेतु षोडशे ज्ञेयो बुधैर्मृत्युर्नरस्य च ॥ ६७ ॥

जो जन्मसमयमें राहु दशम स्थानमें हो तो उस बालककी सोल्हवें वर्षमें मृत्यु होती है यह पंडितोंने कहा है वा दशम घरका मालक होकर जन्ममें हो तो यही फल कहना चाहिये ॥ ६७ ॥

अग्रजातं रविर्हन्ति पृष्ठजातं शनैश्चरः ॥
जातंजातंकुजोहंतिसहजस्थोभवेद्यदि ॥ ६८ ॥

यदि सूर्य तीसरे हो तो उत्पन्न हुए बालकसे पहला बालक मर जाय शनिश्चर हो तो उस बालककी पीठपर हुए बालकको मारैं और मंगल तीसरे हो तो उसकी पीठपर होनेवाली कई संतानका घातक होता है ॥६८॥

इनाङ्काक्षांत्तातः शशिसुखगृहान्मातृकथितः
कुजाद्भ्रातृस्थानात्सहजइनपुत्राष्टमगृहाव ॥
मृतिर्ज्ञांत्षष्ठेस्याद्भुजइतिक्रमान्मातुलमपिगुरौ-
पुत्रात्पुत्रोसितसदनभाद्दारफलजम् ॥ ६९ ॥

अब ग्रहोंसे ग्रहोंका फल वर्णन करते हैं कि सूर्य जहां स्थित हो वहांसे नवम स्थान द्वारा पितासंबंधी संपूर्ण शुभाशुभ फल विचारना, चन्द्रमासे चतुर्थभावमें माता संबंधी मंगलसे तीसरे स्थानमें भ्रातृसंबंधी, शनिसे अष्टम स्थान द्वारा मृत्युसम्बन्धी, बुधसे छठे स्थान द्वारा रोग और मामाका, बृहस्पतिसे पांचवें स्थान द्वारा पुत्रका और शुक्रसे सातवें स्थान द्वारा स्त्री सम्बन्धी समस्त विचार करना चाहिये ॥ ६९ ॥

यो यो भावः स्वामिदृष्टो युतो वा सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तस्यापि वृद्धिः ॥ पापैरेवं तस्य भावस्य हानिर्निर्देष्टव्या पृच्छतो जन्मतो वा ॥ ७० ॥

जिस जिस भावका स्वामी शुभग्रह अपने घरको देखता हो, वा अपने स्थानमें स्थित हो तो वह ग्रह उस उस भावकी वृद्धि करता है और पापग्रह जिस भावका स्वामी हो उस भावको देखता हो वा उस भावमें स्थित हो तो

उस भावकी हानि करता है, यह बात प्रश्नसमय वा जन्मकालमें विचारनी ॥ ७० ॥

यद्भावनाथोरिपुरन्ध्ररिःफे दुःस्थानपो यद्भवनस्थितो वा ॥ तद्भावनाशं कथयंति तज्ज्ञाः शुभेक्षिते तद्भवनस्य सौख्यम् ॥ ७१ ॥

जिस भावका स्वामी छठें आठवें बारहवें स्थानमें हो अथवा दुःस्थान ६।८।१२ का स्वामी जिस भावमें स्थित हो, तो उस भावफलका विनाश कहना चाहिये यदि उस भावमें शुभग्रहोंकी दृष्टि हो तो उस भावके सुखकी प्राप्ति होती है ॥ ७१ ॥

अब राशियोंका रंग कहते हैं।

मेषेरक्तं वृषे श्वेतं मिथुने नीलवर्णकम् ॥
कर्कटे श्वेतरक्तं च सिंहे धूम्रं च पाण्डुरम् ॥७२॥
कन्याविचित्रवर्णश्च तुले धूम्रं प्रकीर्तितम् ॥
पिशंगो वृश्चिके ज्ञेयः पिंगलो धनुषस्तथा ॥७३॥

कुर्बुरो मकरे ज्ञेयो बभ्रुवर्णं घटे वदेत् ॥
मीनवर्णं झषे ज्ञेयो राशिवर्णान्वदेद्बुधः ॥ ७४ ॥

मेषमें लाल रंग, वृषमें सफेद, मिथुनमें नील, कर्कमें श्वेत लाल, सिंहमें धूमेला और पाण्डुवर्ण ॥७२॥ कन्यामें विचित्रवर्ण (अनेक रंग) तुलामें धूएंका-सा रंग, वृश्चिक में पीत रंग, धनुमें भी पीत रंग॥७३॥ मकरमें कबरा अर्थात् दो रंग मिला हुआ श्वेत काला आदि, कुम्भमें न्योले सा भूरा, मीनमें मछलीका सा रंग जानना इससे प्रसूताके भोजन वस्त्रका निर्णय करें कुछ बालकका रंग भी कहै॥७४॥

उच्चनीचग्रहचक्रम्

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. | रा. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उच्च | १ | २ | १० | ६ | ४ | १२ | ७ | ३ | ८ |
| नीच | ७ | ९ | ४ | १२ | १० | ६ | १ | ८ | ३ |

## ग्रहमैत्रीचक्रम्

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | बु. | बृ. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मित्र | चं. मं. बृ. | र. बु. | र. चं. बृ. | सू. शु. | सू. चं. मं. | बु. श. | बु. शु. |
| सम | बु. | मं. बृ. शु. श. | शु. श. | मं. बृ. श. | शु. | मं. बृ. | गु. |
| शत्रु. | शु. श. | ०० | बु. | चं. | श. बु. | सू. चं. | चं. मं. |

## राशीशवर्णनम्

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः ॥
बुधःकन्यामिथुनयोःप्रोक्तःकर्कस्यचन्द्रमा ॥७५॥

मेष और वृश्चिकका स्वामी मंगल है, वृष तुलाका स्वामी शुक्र है, कन्या मिथुनका स्वामी बुध है, कर्कका स्वामी चन्द्रमा है ॥ ७५ ॥

स्यान्मीनधनुषोर्जीवः शनिर्मकरकुम्भयोः ॥
सिंहस्याधिपतिःसूर्यःकथितोगणकोत्तमैः ॥ ७६ ॥

मीन धनका स्वामी बृहस्पति, मकर कुंभका शनिश्चर, और सिंहका स्वामी पंडितोंने सूर्य कहा है ॥७६॥

गोजाश्विकर्किमिथुनाः समृगा निशाख्याः ॥
पृष्ठोदया विमिथुनाः कथितास्त एव ॥
शीर्षोदया दिनबलाश्च भवन्ति शेषा ॥
लग्नं समेत्युभयतः प्रतिरोमयुग्मम् ॥ ७७ ॥

वृष, मेष, धन, कर्क मिथुन, मकर यह राशि रात्रि बली हैं यही पृष्ठोदय कहाती हैं, परंतु इनमें मिथुन पृष्ठोदय नहीं है, और सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ यह दिवा बली हैं और यही शीर्षोदय कहाती हैं, मिथुन भी शीर्षोदय है, और मीन दो मछली मुख पूंछ मिलाकर गोलाकार होनेसे शीर्षोदय भी है जो पीठसे उदय होती है वह पृष्ठोदय, जो शिरसे उदय होती है वह शीर्षोदय, मीन मुख पूंछ दोनोंसे उदय होता है इसमे दोनों प्रकार है ॥ ७७ ॥

क्रूरः सौम्यः पुरुषवनिते ते च रागद्विदेहाः प्रागादीशाः क्रियवृषनृयुक्कर्कटाः सत्रिकोणाः ॥ मार्तण्डेन्द्वोरयुजि समभे चन्द्रभान्वोश्चहोरे देष्काणाः स्युःस्वभवनसुतत्रित्रिकोणाधिपानाम् ॥ ७८ ॥

मेष राशि क्रूर पुरुष, वृष स्त्री, सौम्य । मिथुन क्रूर पुरुष, कर्क स्त्री, सौम्य । सिंह पुरुष क्रूर, कन्या स्त्री सौम्य । तुला क्रूर पुरुष, वृश्चिक स्त्री, सौम्य । धन क्रूर पुरुष, मकर स्त्री, सौम्य । कुंभ पुरुष क्रूर, मीन स्त्री, सौम्य । मेष कर्क तुला मकर चर, वृष सिंह वृश्चिक कुंभ स्थिर, मिथुन कन्या धन मीन यह द्विस्वभाव हैं। मेष सिंह धन पूर्व, वृष कन्या मकर दक्षिण, मिथुन तुला कुंभ पश्चिम, कर्क वृश्चिक मीन राशियोंकी उत्तरदिशामें स्थिति है होरा विषमराशिमें पूर्वार्द्ध १५ अंशपर्यंत सूर्य की १५ से ३० तक चन्द्रमाकी । समराशिमें पन्द्रह अंशतक चन्द्रमाकी ३० तक सूर्यकी होती है। द्रेष्काण

एकराशिमें दश दश अंशके ३ होते हैं जो राशि है पहले दश अंशपर्यंत उसी राशिके स्वामीका द्रेष्काण होता है, १० से बीसतक उसराशिसे पांचवीं राशिके स्वामीका २० से ३० पर्यंत इस राशिसे नवी राशिके स्वामीका द्रेष्काण होता है यथा मेषके १० अंश पर्यंत मेषके स्वामी मंगलका १० से बीसतक मेषसे पंचम सिंहके स्वामी सूर्यका २० से ३० तक मेषसे नवम धनके स्वामी बृहस्पतिका द्रेष्काण होता है, ऐसा सर्वत्र जानना नवांशक एकराशिके नौ भाग अर्थात् ३ अंश २० कला होता है उसकी गिन्ती मेष सिंह धनमें मेषसे गिनना वृष कन्या मकरमें मकरसे। मिथुन तुला कुंभमें तुला से। कर्क वृश्चिक मीनमें कर्कसे। मेष सिंह धन आदि तीन २ राशियोंकी एक संज्ञा है, एक संज्ञामें जो राशि चर है उसीसे पहले नवांश गणना होती है ॥ ७८ ॥

कण्टककेन्द्रचतुष्टयसंज्ञाः सप्तमलग्नचतुर्थखभा-

नाम् । तेषु यथाभिहितेषु बलाढ्यः कीटनराम्बु-
चराः पशवश्च ॥ ७९ ॥

पहले चौथे सातवें दशमें भावोंके नाम कण्टक केन्द्र चतुष्टय यह तीन हैं । इनमें कीट, मनुष्य, जलचर, पशु यह राशि क्रमसे बलवान् होती हैं । यथा कीट राशि वृश्चिक सप्तमस्थानमें मिथुन, तुला, कन्या, कुंभ और धनका पूर्वार्द्ध ये मनुष्यराशि १ में कर्क मीन मकरका उत्तरार्द्ध यह जलचर राशि चतुर्थस्थानमें बलवान् है मेष, सिंह, वृष, धनका उत्तरार्द्ध और मकरका पूर्वार्द्ध यह चतुष्पदराशि दशमस्थानमें बलवान् होती है ॥ ७९ ॥

वर्णास्ताम्रसितातिरक्तहरितव्यापीतिचित्रासिता
वह्न्यम्बग्निजकेशवेन्द्रशचिकाः सूर्यादिनाथाः
क्रमात् ॥ प्रागाद्या रविशुक्रलोहिततमाः सौरेन्दु-
वित्सूरयः क्षीणेन्द्वर्कमहीसुतार्कतनयाः पापाबुध-
स्तैर्युतः ॥ ८० ॥

प्रश्नमें जन्ममें वस्तु बतानेके निमित्त वर्णस्वामी कहते हैं ताम्रवर्णका स्वामी सूर्य, श्वेतका चन्द्रमा अति रक्तका मंगल, हरितका बुध, पीलेका बृहस्पति, चित्रका शुक्र, कृष्ण वस्तुका शनि स्वामी है। ग्रहोंके स्वामी कहते हैं–सूर्यका अग्नि, चन्द्रका जल, मंगलका कार्तिकेय, बुधके विष्णु, बृहस्पतिके इन्द्र, शुक्रकी इन्द्राणी, शनिके ब्रह्मा। अब दिशाओंके स्वामी कहते हैं–पूर्वके सूर्य, आग्नेयके शुक्र, दक्षिणके मंगल, नैऋत्यके राहु, पश्चिमके शनि, वायव्यके चन्द्रमा, उत्तरके बुध, ईशानके बृहस्पति हैं। दक्षिण चन्द्रमा, सूर्य, मंगल और शनि यह पापग्रह हैं, पूर्वचन्द्र निष्पाप बुध बृहस्पति और शुक्र यह शुभग्रह हैं- पापग्रहयुक्त बुध पापही होता है। बुध शनि नपुंसक, चन्द्रमा शुक्र स्त्री, सूर्य मंगल बृहस्पति पुरुष ग्रह हैं ॥ ८० ॥

त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमान्यवलोकयन्ति
चरणाभिवृद्धितः ॥ रविजामरेज्यरुधिराः परे च ये
क्रमशो भवंति किल वीक्षणेऽधिकाः ॥ ८१ ॥

अब ग्रहदृष्टि कहते हैं जिस भावमें जो ग्रह बैठा है उससे ३ । १० स्थानको चौथाई दृष्टिसे ९।५ स्थानको आधी दृष्टिसे ४।८ स्थानको पौनदृष्टिसे और सप्तमस्थानको पूर्ण दृष्टिसे सभी ग्रह देखते हैं, कोई यह अर्थ करते हैं कि रविज शनि चौथाई दृष्टिका फल देता है, अमरेज्य बृहस्पति आधा फल, रुधिर मंगल तीनभाग फल और दूसरे ग्रह चन्द्र बुध शुक्र सूर्य यह दृष्टिका पूर्ण फल देते हैं, और बहुजनसम्मत यह अर्थ है कि शनि ३।१० दृष्टिका पूर्णफल देता है बृहस्पति ९।५ भावमें, मंगल ४।९ भावमें और चन्द्र, बुध, शुक्र, सूर्य सप्तमभावमें दृष्टिका पूर्णफल देते हैं ॥ ८१ ॥

इति श्रीसर्वगुणसम्पन्नमिश्रसुखानन्दसूनुपंडित
ज्वालाप्रसादमिश्रकृतहिन्दीटीकासहितं
लघुजातकं सम्पूर्णम्

---

दोहा—उन्निससै इकसठ सुभग, संवत् ज्येष्ठ सु मास ।।
शुक्लपक्ष शशि पूर्णिमा, पूर्ण कियो सुखरास ।।१।।
जातक आदिक ग्रंथको, अति उत्तम ले सार ।।
कीनो सुंदर ग्रंथ यह, बुधजनको उपकार ।।२।।
वसत रामगंगानिकट, नगर मुरादाबाद ।।
भजन करत हरिको तहां, बुध ज्वालापरसाद ।।३।।
श्रीवेंकटेश्वर यंत्रपति, खेमराज बड़ भाग ।।
तिन हित यह टीकाकियो, दियो सहित अनुराग ।।४।।
भजहु नित्य भगवानको, तो पावहु विश्राम ।।
यासे उत्तम और नहिं, भजो राम घनश्याम ।।५।।

सम्पूर्णम्

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :


**खेमराज श्रीकृष्णदास**
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

**गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,**
**लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो**
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

**खेमराज श्रीकृष्णदास**
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.


KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS